

श्री काली चालीसा

जयकाली कलमिलहरण, महिमा अगम अपार ।
महषि मर्दनी कालिका, देहु अभय अपार ॥

अरुमिद मान मटावन हारी । मुण्डमाल गल सोहत प्यारी ॥
अष्टभुजी सुखदायक माता । दुष्टदलन जग में वखियाता ॥
भाल वशाल मुकुट छवछाजै । कर में शीश शत्रु का साजै ॥
दूजे हाथ लिए मधु प्याला । हाथ तीसरे सोहत भाला ॥
चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे । छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे ॥
सप्तम करदमकत असप्यारी । शोभा अद्भुत मात तुम्हारी ॥
अष्टम कर भक्तन वर दाता । जग मनहरण रूप ये माता ॥
भक्तन में अनुरक्त भवानी । नशिदनि रटें ऋषी-मुनिजिज्ञानी ॥
महशक्ति अतिप्रबल पुनीता । तू ही काली तू ही सीता ॥
पतति तारिणी हे जग पालक । कल्याणी पापी कुल घालक ॥
शेष सुरेश न पावत पारा । गौरी रूप धर्यो इक बारा ॥
तुम समान दाता नहि दूजा । वधिवित करें भक्तजन पूजा ॥
रूप भयंकर जब तुम धारा । दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा ॥
नाम अनेकन मात तुम्हारे । भक्तजनों के संकट टारे ॥
कलिके कष्ट कलेशन हरनी । भव भय मोचन मंगल करनी ॥
महिमा अगम वेद यश गावैं । नारद शारद पार न पावैं ॥
भू पर भार बढ्यौ जब भारी । तब तब तुम प्रकटी महतारी ॥
आदि अनादि अभय वरदाता । विश्ववदिति भव संकट त्राता ॥
कृसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा । उसको सदा अभय वर दीन्हा ॥
ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा । काल रूप लखति मुरो भेषा ॥
कलुआ भैरों संग तुम्हारे । अरि हति रूप भयानक धारे ॥
सेवक लांगुर रहत अगारी । चौसठ जोगन आज्ञाकारी ॥
त्रेता में रघुवर हति आई । दशकंधर की सैन नसाई ॥
खेला रण का खेल नरिला । भरा मांस-मज्जा से प्याला ॥
रौद्र रूप लखि दानव भागे । कथिौ गवन भवन नजि त्यागे ॥
तब ऐसौ तामस चढ़ आयो । स्वजन वजिन को भेद भुलायो ॥
ये बालक लखि शंकर आए । राह रोक चरनन में धाए ॥
तब मुख जीभ नकिर जो आई । यही रूप प्रचलति है माई ॥
बाढ्यो महषिसुर मद भारी । पीड़ति कएि सकल नर-नारी ॥
करूण पुकार सुनी भक्तन की । पीर मटावन हति जन-जन की ॥
तब प्रगटी नजि सैन समेता । नाम पड़ा मां महषि वजिता ॥
शुंभ नशिंभ हने छन माहीं । तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं ॥
मान मथनहारी खल दल के । सदा सहायक भक्त वकिल के ॥
दीन वहिन करैं नति सेवा । पावैं मनवांछति फल मेवा ॥
संकट में जो सुमरिन करहीं । उनके कष्ट मातु तुम हरहीं ॥
प्रेम सहति जो कीरति गावैं । भव बन्धन सों मुक्ती पावैं ॥
काली चालीसा जो पढ़हीं । स्वरगलोक बनि बंधन चढ़हीं ॥
दया दृष्टि हेरौ जगदम्बा । केहि कारण मां कथिौ वलिम्बा ॥
करहु मातु भक्तन रखवाली । जयति जयति काली कंकाली ॥
सेवक दीन अनाथ अनारी । भक्तभाव युति शरण तुम्हारी ॥

तनिकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ ॥